ISSN-0970-7603
A Peer Reviewed Journal

भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका

BHARATIYA SHIKSHA SHODH PATRIKA

वर्ष 39, अंक 1, जनवरी–जून 2020
Vol. 39, No. 1, January-June 2020

भारतीय शिक्षा शोध संस्थान
सरस्वती कुंज, निराला नगर, लखनऊ–226020 (उत्तर प्रदेश)
Bharatiya Shiksha Shodh Sansthan
Saraswati Kunj, Nirala Nagar, Lucknow-226020 (Uttar Pradesh)
Ph. No. 0522-2787816, E-mail: sansthanshodh@gmail.com
Website : www.bssslko.org.in

विषय-सूची
Contents

*	भारतीय शिक्षा शोध संस्थान के प्रकाशन		2
*	सम्पादकीय / Editorial		3

शोधपत्र / Research Articles

*	श्रीमद्भगवद्गीता में शान्ति-शिक्षा का स्वरूप	डॉ. सुरेन्द्र महतो	6
*	Nature of Vedic Education	Dr. Awdhesh Srivastava Garima	12
*	Innovations in Teaching and Learning	Dr. Pravesh Kumar	18
*	अभिविन्यास पाठ्यक्रम में भाग लेने वाली महिला प्रतिभागियों का आत्मरक्षा प्रशिक्षण के प्रति जागरूकता का अध्ययन	डॉ. सरोज राय	24
*	उच्च शिक्षा का निजीकरण : चुनौतियाँ एवं सम्भावनाएँ	डॉ. निरपेन्द्र कुमार सिन्हा	29
*	Study of Emotional, Social and Educational Adjustments of Senior Secondary Students from Moradabad City	Prof. Rajkumari Singh Mrs. Priyanka Gupta	34
*	Open Educational Practice: An Attitude of Teacher Towards The Use of Information Communication Technology in Higher Education of Senior Secondary Students from Moradabad City	Akhand Mishra	41
*	गुणात्मक शोध में व्यष्टि अध्ययन पोषित केन्द्रित समूह परिचर्चा	अनामिका सिंह राठौर प्रोफेसर निधि बाला	48
*	Educational Thoughts of Gita	Prof. S.K. Dwivedi	55

विविध / Miscellaneous

समसामयिक गतिविधियाँ / Current Events	60
शोध आलेख प्रकाशनार्थ भेजने के पत्र का प्रारूप	61
Format of Letter for Sending Research Article/Research Note for Publication	62
लेखकों के सूचनार्थ / Information for Contributors	63

श्रीमद्भगवद्गीता में शान्ति-शिक्षा का स्वरूप

* डॉ. सुरेन्द्र महतो

Abstract

"After gaining knowledge, one attains ultimate peace" - according to this sentence of Shree Madbhagvad-Gita, knowledge is the means to find peace, which is a universal truth. Every nation, society, community and individuals of world, every creature wants peace. No one wants turmoil or war. Feared by the terror of war, humanity embraces religion and peace, which contains the feeling of compassion, non-violence and mercy for all creatures. Hiroshima-Nagasaki, Israel-Palestine, Venezuela, midle-east nations can be cited in this context.

Foundation of UNO after Hiroshima-Nagasaki is an example of humanity's seeking peace. Emperor Ashoka's embracing Buddhism after Kalinga war is also an example, which is ample to prove that each human being's final wish is to attain peace through right knowledge or wisdom. Everyone needs to make an effort collectively in this direction, because peace is sought by everyone. It is rightly said, "Peace for all, all for peace." From the time immemorial, Indian wisdom talks about peace-

Let all be happy! Let all be healthy!
Let all see well! Let no one suffer!

प्रसिद्ध चीनी कथन है-

"If you are planning for a year, sow rice
If you are planning for a decade, plant trees.
If you are planning for a lifetime, educate people."

अर्थात् सुस्थिर विकास के लिए लोगों का शिक्षित होना परम आवश्यक है। लोगों को शिक्षित करने के लिए शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करना आवश्यक होता है जो देश-काल व परिस्थिति के अनुरूप परिवर्तनशील होता है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र अथवा समाज का परिचायक है जिससे राष्ट्र समृद्ध व सम्पन्न होता है। कहा भी गया है–**किं-किं न साधयति कल्पलतेव विद्या**' अर्थात् विद्या से क्या क्या नहीं प्राप्त किया जा सकता है। यहाँ तक कि शान्ति और सुख ही नहीं परम् शान्ति अर्थात् मोक्ष को भी शीघ्रता से ज्ञान के द्वारा प्राप्त करने का तरीका गीता में वर्णित है। ज्ञान के कई समानार्थक शब्द प्रयोग में लाये जाते हैं जैसे- विद्या, शिक्षा आदि। लेकिन तीनों ही शब्द स्थान-काल-प्रसंग आदि के आधार पर विविध अर्थों के द्योतक होते हैं। कठोपनिषद् में यम-नचिकेता संवाद में विद्या दो प्रकार की बताई गई है- परा और अपरा अर्थात् आध्यात्मिक और भौतिक। शिक्षा को शास्त्रों में विद्या अथवा ज्ञान प्राप्ति का साधन बताया गया है। 'स्वरवर्णाद्युच्चारणं **शिक्ष्यते सा शिक्षा**', अर्थात् उच्चारण सिखाने की प्रक्रिया शिक्षा है। शिक्षा को वेद अर्थात् ज्ञान प्राप्ति का साधन कहे जाने से इसे वेद अर्थात् ज्ञान का अंग वेदांग कहा गया है।

वर्तमान समय में शिक्षित का मतलब सूचना संग्राहक के रूप में स्वीकार किया जाने लगा है जिससे व्यक्ति जीवन में भौतिक सुखों को प्राप्त करने में सक्षम तो हो पाता है, पर उनके आन्तरिक जीवन में अस्थिरता एवं अशान्ति का

* असिस्टेंट प्रो., शिक्षाशास्त्र विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-110016

ISSN 2454-1230

त्रयोदशोऽङ्कः, XIII[th] Issue

जनवरी-जून, 2021

January-June 2021

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चांदकिरणसलूजा

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

शिक्षाप्रियदर्शिनी (अङ्कः 13)

अनुक्रमणिका

	प्रबन्ध सम्पादकीय	viii
1.	कबीर के साहित्य एवं श्रीमद्भगवद्गीता में वर्णित कर्मयोग के दोहे एवं श्लोकों का व्यक्ति के शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव का अध्ययन प्रो. हरिहृदय अवस्थी एवं अमर नाथ	1
2.	श्रेष्ठ अध्ययन प्रवृत्ति प्रो. नीलाभ तिवारी एवं अनिल कुमार तिवारी	10
3.	प्रयाजयागः डॉ. शम्भु कुमार झा	13
4.	राजस्थान की नौवें दशक की हिन्दी कविता डॉ. अशोक कुमार शर्मा	21
5.	जैनेन्द्र व्याकरण में संज्ञाविधान डॉ जितेंद्र कुमार	33
6.	पाणिनीय व्याकरण में स्थानिवद्भाव : एक विश्लेषण डा रवि प्रभात एवं सुचेता	38
7.	मनोवैज्ञानिक अनुसंधान की प्रकृति एवं क्षेत्र डॉ. आरती शर्मा	42
8.	श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्तित्व डॉ. सुरेन्द्र महतो एवं डा. सुनीलकुमारशर्मा	47
9.	अधिगमाकलनम् डा. इक्कुर्ति वेङ्कटेश्वर्लुः	54
10.	वैकल्पिक शिक्षा: प्रकृति, व्यूह रचनाएँ, संभावनाएं और विकास का परिप्रेक्ष्य डा. अजय कुमार	60
11.	माध्यमिकविद्यार्थिनां परास्मृतेः विश्लेषणात्मकमध्ययनम् डा. नितिन कुमार जैन एवं रेनु	71
12.	भारतीयदर्शने मूल्यानि डॉ. चक्रधरमेहेरः	80

शिक्षाप्रियदर्शिनी
अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रिका, त्रयोदशोऽङ्कः, जनवरी-जून, 2021, ISSN : 2454-1230

8.

श्रीमद्भगवद्गीता में व्यक्तित्व

डॉ. सुरेन्द्र महतो, सहायक आचार्य
डा. सुनीलकुमारशर्मा, सहायक आचार्य
शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

शोधसारांश

व्यक्तित्व से व्यक्ति की समाज में पहचान होती है। व्यक्तित्व व्यक्ति के समग्र गुण और दोषों को अभिव्यक्त करता है। पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों के अनुसार इसके कई भेद किये गये हैं जो विभिन्न तर्कों से सम्पुष्ट है। शिक्षा मनोविज्ञान में भी व्यक्तित्व को प्रमुख स्थान दिया जाता है। जबकि भारतीय वाङ्मय में अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्तित्व के ही नहीं मनोविज्ञान के विभिन्न तथ्यों के विषय में गम्भीरतापूर्वक चिन्तन किया गया है। जिनमें से श्रीमद्भगवद्गीता को सम्पूर्ण विश्व साहित्य में अग्रगण्य स्थान प्राप्त है। श्रीमद्भगवद्गीता में भी शिक्षा मनोविज्ञान के विभिन्न तथ्य जैसे - बुद्धि, व्यक्तित्व, सीखना, स्मृति, विस्मृति, ध्यान, स्वप्न, जिज्ञासा इत्यादि प्राप्त होते है। इनमें से 'श्रीमद्भगमद्गीता में व्यक्तित्व तथा इसके प्रकारों' का विश्लेषण किया गया है जिसमें मुख्य रूप से सात्विक, राजस एवं तामस गुणों के आधार पर व्यक्तित्व के तीन प्रकार की व्याख्या प्राप्त होती है जिसे व्यक्ति के विभिन्न आहार-व्यवहार के आधार पर सोदाहरण व्याख्या इस पत्र में की गयी है।

विषय प्रवेश

मनुष्य स्वभाव से जिज्ञासु एवं चिन्तनशील प्राणी है। जिज्ञासा पूर्ति के लिए वे इधर-उधर भ्रमण करते रहे हैं परिणामस्वरूप भोजन संग्रह करने से प्रारम्भ कर चाँद-तारों तक पहुँच बना लिये हैं। मानव सृष्टि की सभी प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान है अर्थात् यूँ कह सकते हैं कि बुद्धि ही एक ऐसा विशिष्ट तत्त्व मानव में अन्तर्निहित है जिसके कारण उसका व्यक्तित्व उन्हें एक दूसरे से पृथक करता है। कहा भी गया है-''बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।'' अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति विकास का परिचायक है ठीक इसी प्रकार किसी भी समाज या राष्ट्र के विकास का परिचायक वहाँ की शिक्षा व्यवस्था है। जो उनके आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक उन्नति को गति प्रदान करती है। अर्थात् शिक्षा की आवश्यकता एवं सार्थकता स्वतः सिद्ध है। सभी क्षेत्रें में विकास अनवरत गति से चल रहा है परिणामतः शिक्षा प्रक्रिया भी इस से अछूता नही है। शिक्षा शब्द संज्ञा एवं क्रिया दोनों रूपों में प्रयुक्त होती है। शिक्षा जब संज्ञा के रूप में प्रयोग किया जाता है तो उसे एक विषय के रूप में स्वीकार किया जाता है जो अभी विकासशील है। अपितु जब यह प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है तो यह पूर्व विकसित रूप में हमारे समक्ष है। यहाँ हम शिक्षा का एक विषय के रूप में अध्ययन करेंगे। शिक्षा अथवा शिक्षाशास्त्र एक नवीन संकल्पना है जो शिक्षा प्रक्रिया के विविध क्षेत्रें सीखना-सिखाना, मनोवैज्ञानिक,

ISSN 2454-1230

नवदशोऽङ्कः, XIX[th] Issue

जनवरी - जून , 2024

January - June, 2024

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया **समकक्षव्यक्ति**-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः
प्रो. श्रीनिवास वरखेडी

संरक्षकः
प्रो. राधागोविन्दत्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः
प्रो. पवनकुमारः

प्रबन्धसम्पादकौ
प्रो. अंजूसेठः
श्री अरुणकुमारमंगलः (अधिवक्ता)

अनुक्रमणिका

सम्पादकीय

पबन्ध सम्पादकीय

शुभकामनासन्देश

शिक्षाप्रियदर्शिनी **के गत अंक- 18 की समीक्षा**

1. तिङर्थनिरूपणम् ..... डॉ. सुधाकरमिश्र
2. व्याकरणशास्त्रस्य संक्षिप्तेतिहास: ..... डॉ. शिवदत्त आर्य
3. **शिक्षाक्षेत्रे** ऐतिहासिकानुसन्धानोपागम: ..... डॉ. आरती शर्मा
4. दार्शनिकानुसन्धानोपागम: ..... डॉ. सुनीलकुमारशर्मा
5. **दर्शनान्तरेषु** पदार्थतत्त्वनिर्वचनम् ..... डॉ. जगत् ज्योतिपात्र
6. उपमास्वरूपविमर्श: ..... डॉ. सौरभदुबे
7. **मानवजीवने आत्मानुशासनाय संस्कृतस्य उपादेयता** ..... डॉ. प्रज्ञा
8. अप्पयदीक्षितस्य व्याकरणवैभवम् ..... मनोजकुमारगुप्ता
9. महाभाष्यप्रदीपव्याख्यातृपरिचय: ..... शङ्खशुभ्रगच्छित:
10. बृहत्संहितायां **निरूपितो** भूकम्पविचार: ..... दिवाकरशर्मा
11. **मनुस्मृतौ वर्णिता: दण्डस्य प्रकारा:** ..... ध्वनिका सूद
12. व्यक्तित्वपक्षेषु **रुचे: महत्त्वम् उपयोगश्च** ..... ज्योतिनाथ:
13. पूर्वकारिकोक्तरीत्या अग्निमुखविधि: **एकम्**– परिशीलनम् ..... श्री विष्णुदास देशपाण्डे
14. सिद्धान्तज्यौतिषे **अक्षक्षेत्राणां महत्त्वम्** ..... गिरीशभट्ट: बि.
15. **अधिगम व्यवहार सम्बद्ध उपकरण निर्माण एवं अध्ययन** ..... डॉ. नितिन कुमार जैन एवं दुर्गेश त्रिपाठी
16. **विश्व में वैदिक ज्ञान 'योग' का नवप्रवर्तनीय उपयोग** ..... डॉ. विकास शर्मा
17. **आधिदैविक एवं** आधिभौतिक **दु:खों के याज्ञिक उपचार** ..... ड़ॉ. वेणुधर दाश
18. **महाभारत में पर्यावरण चेतना** ..... नकुल कुमार साहु
19. **स्वास्थ रहने के लिए प्राणायाम की** प्रासंगिकता **(योगशास्त्र के अनुसार अभ्यास)** ..... दिवाकर शर्मा
20. **भारतीय संस्कृति में यज्ञ का महत्त्व** ..... कणिका
21. **भारतीय ज्ञान परम्परा का वैविध्य** ..... डा. वीणा मिश्रा
22. Efficacy of multiple intelligence-based instruction models for school teaching ..... Prof. K. Ravishankar Menon, Dr Suneel Kumar Sharma & Sanjay Bhardwaj
23. Importance of Mitāhār in Yoga Philosophy ..... Prof. Subash Ch. Dash & Sagar Mantry

शिक्षाप्रियदर्शिनी के गत अंक- 18 की समीक्षा

डॉ. सुरेन्द्र महतो

सहायक आचार्य, शिक्षापीठ

श्री देवेश प्रसाद सकलानी

शोधछात्र-शिक्षा

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-16

शिक्षाप्रियदर्शिनी, जुलाई-दिसम्बर 2023 - XVIII वाँ अंक में प्रकाशित कुल 21 आलेखों में से पाँच पत्र संस्कृत भाषा में, चौदह पत्र हिन्दी भाषा में तथा दो पत्र अंग्रेजी में प्रकाशित हैं। संस्कृत भाषा में प्रकाशित पाँच पत्रों में दो ज्योतिषशास्त्र, एक व्याकरणशास्त्र, एक धर्मशास्त्र तथा एक साहित्य (अलंकार) शास्त्र से सम्बन्धित है।

हिन्दी भाषा में प्रकाशित आलेखों (14) में से वेद सम्बन्धित चार (4) उपनिषद् (गीता) - 3, पुराण सम्बन्धित- 2, कालिदास साहित्य (मनोविज्ञान)- 1, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020-2, हिन्दी भाषा साहित्य-2, अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित दो आलेखों में एक वैदिककाल में नारी तथा दूसरा पोषण अर्थात् आयुर्वेद से सम्बन्धित है। लेखक के विभाग के आधार पर दस आलेख शोधच्छात्रों द्वारा, दस प्राध्यापकों द्वारा तथा दो स्वतन्त्र लेखकों द्वारा लिखित है। जिनका विशिष्ट विवरण अनुक्रमणिका के आधार पर इस प्रकार है -

सर्वप्रथम श्री देवज्योतिकुण्डु शोधच्छात्र वैदिक दर्शन विभाग संस्कृत विद्याधर्म विज्ञान संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी द्वारा **'ग्रहान्तिग्रह- लक्षणबन्धस्वरूपं ततो मोक्षोयायश्च'** नामक शोधालेख बृहदारण्यकोपनिषद् पर आधारित है। इसके द्वितीय ब्रह्मण में 'ग्रहान्तिग्रहबन्धन' विषय पर चर्चा की गई है तथा चतुर्थ ब्राह्मण में मोक्ष के उपाय तथा पञ्च ब्रह्मण में मोक्ष के साधन के रूप में सन्यास का निरूपण प्राप्त होता है। इसका निरूपण करते समय लेखक ने सर्वप्रथम उपक्रम में बृहदारण्यक उपनिषद् के स्वरूप का वर्णन किया है पुनः ग्रहातिग्रहस्वरूप तत्त्वज्ञ देहावसान विचार, आत्मा की व्यापकता के विवेचन क्रम में अन्य सन्दर्भों केनोपनिषद् एवं आत्म का स्वरूप। प्रश्नोषनिषद् आदि सन्दर्भों को भी उद्धृत किया है अन्त में उपसंहार में सम्पूर्ण शोध पत्र का निष्कर्ष लिखा है।

श्री बुलेटमण्डल सहायक अध्यापक संस्कृत विभाग डायमण्ड हारवार महिला विश्वविद्यालय (प. बंगाल) द्वारा लिखित शोध आलेख का शीर्षक **महाभाष्यकार दिशा** प्रत्ययाधिकारस्थानां **योगविभागानां समोक्षा है।** जिसमें शोधसार, कूटशब्द, उपोद्घात, विषयवस्तु, निष्कर्ष तथा सन्दर्भग्रन्थ की सूची दी गई है। इस पत्र का मुख्य ध्येय प्रत्ययाधिकारस्थ सूत्रों का योग विभाग द्वारा शब्द की सिद्धि अर्थात् इष्टासिद्धि के विषय में महाभाष्यकार के मतों उपस्थापित किया का गया हैं। **योगविभागाद् इष्टसिद्धिः** इस परिभाषा के सन्दर्भ देते हुए कहते हैं कि जिन शब्दों की सिद्धि की प्रक्रिया पाणिनी सूत्रों से सम्भव नहीं हैं वहाँ योग-विभाग नामक उपाय का आश्रय लिया जाता है। उदाहरण के रूप में विंशतित्रिंशद्भ्यां ड्वुन्न संज्ञायाम् तत्र च दीयते कार्यं भवतत्। तौ सत्, लृट शेषे च, युष्मदस्मदोरन्यतरस्यां खञ् च, तस्मिन्णिच युष्माकास्माकौ तथा किमिदम्भ्यां वो घः सूत्रों के योग-विभाग द्वारा समाधान किस प्रकार किया जाता है। उदाहरणपूर्वक विवेचित है।

ISSN 2454-1230

चतुर्दशोऽङ्कः, XIV[th] Issue

जुलाई-दिसम्बर, 2021

July-December 2021

शिक्षाप्रियदर्शिनी

अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता

बहुभाषी-षाण्मासिक-शोधपत्रिका

SHIKSHA PRIYADARSHINI

(An International Peer-Reviewed Multi-Lingual)
Half-Yearly Research Journal)

मुख्यसंरक्षकः

प्रो. श्रीनिवासः वरखेडी

प्रधानसम्पादकः

प्रो. चांदकिरणसलूजा

प्रबन्धसम्पादकः

प्रो. पवनकुमारः

शिक्षाप्रियदर्शिनी (अङ्क: 14)

अनुक्रमणिका

	प्रधान सम्पादकीय	viii
	प्रबन्ध सम्पादकीय	ix
1.	राष्ट्रियशिक्षानीति: **2020** प्रो. चान्दकिरण सलूजा	1
2.	'राष्ट्रियशिक्षानीति: **2020' सन्दर्भे** संस्कृतविश्वविद्यालयेषु बहुविषयकतायाः क्रियान्वयनोपायाः प्रो. सन्तोषमित्तलः	6
3.	**National Education Policy 2020: Inclusive Classroom Environment and Constructivist Learning Approach** Prof. Rachna Verma Mohan	12
4.	**राष्ट्रीय शिक्षानीति 2020 के सन्दर्भ में अध्यापक शिक्षा** डा. प्रकाश चन्द्र पन्त 'दीप'	21
5.	**नई शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन** डा. सुरेंद्र महतो	32
6.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक की संकल्पना** डा. दयानिधि शर्मा	36
7.	**शैक्षिक तकनीकी के प्रोन्नयन के लिए राष्ट्रीय शिक्षा निति-2020, के दिशानिर्देश** डा. सुनील कुमार शर्मा	43
8.	**NEP 2020 : Core Spirit and its Objectives** Dr. Jitender Kumar	55
9.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 की दार्शनिक पृष्ठभूमि** डा. नितिन कुमार जैन	67
10.	नवराष्ट्रियशिक्षानीते: **परिप्रेक्ष्ये संस्कृतशिक्षा** डा. मनीषजुगरानः	74
11.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 के परिप्रेक्ष्य में** पाठ्यचर्यागत **परिवर्तन** डा. अजय कुमार	81

शिक्षाप्रियदर्शिनी
(अन्ताराष्ट्रिया समकक्षव्यक्ति-समीक्षिता बहुभाषीयशोधपत्रिका)
चतुर्दशोऽङ्कः, जुलाई-दिसम्बर, 20
ISSN : 2454-12

5.

नई शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में भारतीय शिक्षा एवं डॉ. एस. राधाकृष्णन

डॉ. सुरेन्द्र महतो

सहायक प्राध्यापक, शिक्षा संकाय

श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रिय संस्कृत विश्वविद्यालय (केन्द्रीय विश्वविद्यालय)

नई दिल्ली

"शिक्षा व्यवस्था में किए जा रहे बुनियादी बदलावों के केन्द्र में अवश्य ही शिक्षक होने चाहिए।"[1] राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का यह अंश शिक्षा व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका स्वतः स्पष्ट करती है भारतीय शिक्षा व्यवस्था (विश्व भर में अपनी अमिट छाप छोड़ी है।) जो सम्पूर्ण विश्व के लिए अनुकरणीय रहा है। भारतीय शिक्षा व्यवस्था में शिक्षकों का स्थान सर्व प्रमुख रहा है इसका साक्ष्य भारतीय साहित्य में बहुतायत प्राप्त होते हैं। विशेषकर उपनिषदों में प्राप्त गुरु-शिष्य संवाद आदि अनेकों शैक्षिक सुदृढ़ता का प्रमाण है। ना सिर्फ प्राचीन काल और मध्यकाल में अपितु आधुनिक काल में भी भारत में शिक्षकों की एक परम्परा सी स्थापित है। जिनमें से एक नाम बड़े आदर और सम्मान के साथ लिया जाता है वह है भारत रत्न डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन जिनकी विद्वता की ख्याति ना केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर फैली हुई है। भारतीय शिक्षा एवं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन से सम्बद्ध कुछ महत्त्वपूर्ण अंशों को इस पत्र में उद्धृत किया गया है।

सम्पूर्ण विश्व, विकास के मूल में शिक्षा के स्थान को एक मत से स्वीकार किया है। किसी भी राष्ट्र की शिक्षा व्यवस्था उसके विकास के लिये जिम्मेवार मानी जाती है। भारत प्राचीन काल से ही समृद्ध रहा है इसका मुख्य कारण है यहां की समृद्ध शिक्षा व्यवस्था। जहां प्राचीन काल में वैदिक ऋषियों की बात करें या उत्तर वैदिकालीन। वैज्ञानिक गौतम, कणाद, आर्यभट्ट, नागार्जुन या फिर चिकित्सा शास्त्र के विद्वान चरक, सुश्रुत आदि। भारतीय साहित्य विश्व का सबसे समृद्ध एवं प्राचीन साहित्य है। जो शिक्षक एवं छात्र (गुरु-शिष्य) परम्परा के माध्यम से ही आज भी हमारे समक्ष ज्यों के त्यों उपलब्ध है।

आधुनिक भारतीय शिक्षा में प्रसिद्ध शिक्षकों की सूची में कुछ महत्त्वपूर्ण नाम इस प्रकार है - समर्थगुरु रामदास, रामकृष्ण परमहंस, महर्षि दयानन्द, स्वामी विवेकानन्द, महात्मा गांधी, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महर्षि अरविंद घोष, मौलाना अब्दुल कलाम आजाद, डॉ. एस. राधाकृष्णन, डॉ. जाकिर हुसैन आदि। इन सभी ने अपनी शिक्षा के द्वारा राष्ट्र को समृद्ध किया, साथ ही एक नवीन तथा अनुकरणीय कीर्तिमान स्थापित किया। स्वतन्त्र भारत के प्रथम शिक्षा आयोग के अध्यक्ष डॉ. एस. राधाकृष्णन की विद्वता तथा दूरदर्शिता की छाप भारतीय शिक्षा व्यवस्था में आज भी अमिट है। शिक्षकों के खोये हुए सम्मान को वापस दिलाने हेतु शिक्षक दिवस की संकल्पना एक आदर्श शिक्षक की महानता को प्रकट करता है। आज जब आजादी के 73-74 वर्ष बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लायी गयी है तो इसमें डॉ. एस. राधाकृष्णन के सपने को महत्त्वपूर्ण

UGC - CARE LISTED

ISSN: 0974-8946

अनुसन्धान-प्रकाशन-विभागीया त्रैमासिकी शोध-पत्रिका

शोध-प्रभा

(A Refereed & Peer-Reviewed Quarterly Research Journal)

48 वर्षे तृतीयोऽङ्कः (जुलाई-सितम्बर) 2023 ई.

प्रधानसम्पादकः

प्रो. मुरलीमनोहरपाठकः

कुलपतिः

सम्पादकः

प्रो. शिवशङ्करमिश्रः

शोधविभागाध्यक्षः

सहसम्पादकः

डॉ. ज्ञानधरपाठकः

श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः

(केन्द्रीयविश्वविद्यालयः)

नवदेहली-16

विषयानुक्रमः

संस्कृतविभागः

1. शाब्दिकाभिमतो नामार्थविचारः 1-7
   - डॉ. गोविन्दपौडेलः

2. मम्मटीयगूणीभूतव्यङ्ग्स्योपजीव्यत्वविचारः 8-20
   - डॉ. राजकुमारमिश्रः

3. निरुक्तमतेन जातिपदार्थविचारः 21-27
   - डॉ.बद्रीनारायणगौतमः

4. इण्डोनेशियायाः वायांगसाहित्ये भारतीयनाट्यपरम्परायाः प्रभावः 28-41
   - डॉ. ललितपाण्डेयः

5. जैनसंस्कृतौ पर्वाणि 42-47
   - प्रो. कुलदीपकुमारः

हिन्दी विभाग

6. भाट्टमत में श्रुतार्थापत्ति प्रमाण का निरूपण 48-54
   - डॉ. ठाकुर शिवलोचन शाण्डिल्य

7. लास्य-स्वरूप निरूपण 55-66
   - डॉ. मुकेश कुमार मिश्र

8. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा एवं प्रकारों का अध्ययन 67-74
   - डॉ. सुरेन्द्र महतो

UGC-CARE Listed
जुलाई सितम्बर, 2023

शोधप्रभा
वर्ष : 48, तृतीयोऽङ्कः

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा एवं प्रकारों का अध्ययन

- डॉ. सुरेन्द्र महतो*

गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।[1]- इस कथन के अनुसार श्रीमद्भगवद्गीता को भलीभाँति पढ़ लेने/समझ लेने पर समस्त ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। अर्थात् गीता को समझ लेने पर अन्य शास्त्रों की कोई आवश्यकता नहीं है तथा गीता को नहीं समझने पर भी अन्य शास्त्रों में समय लगाना नासमझी है। अतः भारतीय वाङ्मय में श्रीमद्भगवद्गीता ही एक ऐसा ग्रन्थ है, जिसका अनुवाद विश्व की अनेकों भाषाओं में उपलब्ध होता है। इस ग्रन्थ को जो व्यक्ति जिस भाव से अध्ययन करता है, उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होती है। अर्थात् यह ग्रंथ सम्पूर्ण भारतीय शास्त्रों का निचोड़ है। इसकी प्रत्येक आवृत्ति में एक नई अनुभूति की प्राप्ति होती है। श्रीमद्भगवद्गीता के 61 श्लोकों में बुद्धि शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है। बुद्धि शिक्षा-मनोविज्ञान की दृष्टि से ही नहीं अपितु भारतीय दर्शन का भी केन्द्र बिन्दु रहा है। बुद्धि का सन्दर्भ व्याकरण, दर्शन, साहित्य आदि में भी प्राप्त होता है। बुद्धि के अतिरिक्त अन्य मनोवैज्ञानिक तथ्यों जैसे- ध्यान, सीखना, व्यक्तित्व, स्मरण, विस्मरण, स्वप्न, रुचि, अभिवृत्ति आदि भी प्राप्त होते हैं, जबकि मेरा उद्देश्य यहाँ श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा तथा भेद को आधुनिक मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित करना रहा है।

तकनीकी शब्द

व्यवसायात्मिका	- निश्चयात्मिका अर्थात् निर्णयात्मिका।
सात्त्विक	- सत्त्व गुण से सम्बद्ध
राजस्	- रजो गुण से सम्बद्ध
तामस्	- तमो गुण से सम्बद्ध

* सहायक आचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली-16

1. म.भा., भीष्मपर्व, अ. 43/1 एवं संक्षिप्त गीता पृ.-8

जम्बूद्वीप - The Journal Of Indic Studies

Vol. 3 No. 1 (2024): जम्बूद्वीप - the e-Journal of Indic studies

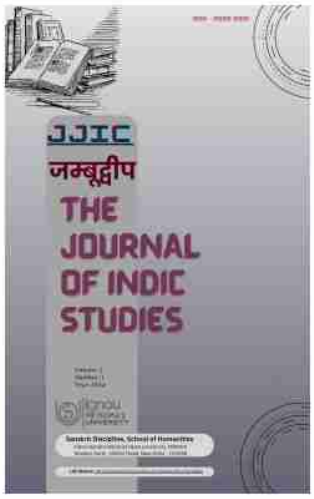

Published: 2024-06-25

Articles

The The need to expand the Sanskrit Literature

Prof. C. Upender Rao

साहित्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना का भाव

Dr.Purushottam Patil

षडङ्गस्वरूपम्

Amit Kumar Sahoo

Women in the Jātakas

Categories of Representation and the Subject of Sexuality

ROHA ROMSHA

प्राचीन भारत के प्रमुख संवत्: एक अवलोकन

Dr. Mukesh Kumar Mishra

"Exploring the Legacy: Chinese Monk Translators in Historical Context"

Brijeshwari Rukwal

Tripathi, Amarendu "Kautilya's Arthshastra and Its Contemporary Relevance in Indian International Relations"

Amarendu Tripathi

शिक्षणाधिगमस्य भारतीया परम्परा

Dr. Surendra Mahto

किरातार्जुनीयम् महाकाव्य का सामुद्रिकशास्त्रीय अध्ययन

Dr. Neeraj Kumar Joshi

पूर्वमीमांसा सम्मत व्याख्याशास्त्र की अपेक्षा-उपेक्षा

Dr. Anoop Pati Tiwari

Current Issue

ATOM 1.0

RSS 2.0

RSS 1.0

Information

For Readers

For Authors

For Librarians

शिक्षणाधिगमस्य भारतीया परम्परा

Bhartiya Tradition of Teaching & Learning

डॉ. सुरेन्द्रमहतो
सहायकाचार्यः, शिक्षापीठम्,
श्रीलालबहादुरशास्त्रीराष्ट्रियसंस्कृतविश्वविद्यालयः, नवदेहली

शिक्षणम् अधिगमश्च एका नैसर्गिकीक्रिया अस्ति। एषा क्रिया प्राणिषु भवति। प्राणिनः क्रियायाः एतस्याः सम्पादनं स्वेच्छापूर्तये आत्मसंतुष्टये च कुर्वन्ति। प्राणिषुमानवः श्रेष्ठः। अतः मानवेषु एषा क्रिया प्रकृष्टरूपेण भवति। शिक्षणस्य क्रियां,अधिगमस्य क्रियां च मेलयित्वा शिक्षणाधिगमप्रक्रियारूपेण ज्ञायते। शिक्षणाधिगमविषये निखिलेऽपि विश्वे शिक्षाशास्त्रिणः प्राचीनकालादैव मननशीलाः सन्ति। एषा क्रिया स्वभाविकी योजिता च भवति। लौकिकी शास्त्रीया च, इत्युक्ते औपचारिकीअनौपचारिकी चप्रसिद्धा। शिक्षणाधिगमविषये भारतीयपरम्परा समृद्धा वर्तते। भारतीयवाङ्मये विषयेऽस्मिन् बहुषु स्थलेषु लिखितं वर्तते। यथा- आचार्यः पूर्वरूपम्। अन्तेवासी उत्तररूपम्। विद्या सन्धिः इति विद्यम्।[1]इत्युक्ते ज्ञानप्राप्तये पक्षत्रयस्य उपस्थितिः अनिवार्या। श्रीमद्भगवद्गीतायां ज्ञानं ज्ञेयं परिज्ञाता।[2] अन्यत्रापि आत्मविषयकं चिन्तनं परिस्थितिषु अनुकूलनाय चिन्तनं, इतिरीतिद्वयं प्रचलितं वर्तते। शास्त्रीया (वैदिकी) लौकिकी व्यावहारिकी च। वैदिकी श्रुत्यादिः। लौकिकी पञ्चतन्त्रहितोपदेशादिः। सर्वत्र शिक्षणाधिगमस्य भारतीयस्वरूपं सन्निहितं वर्तते। परंशोधपत्रेऽस्मिन् किञ्चित् प्रमुखसन्दर्भ एव चर्चिष्यते। यथा- व्याकरणसिद्धान्तकौमुद्याः क्त्वा[3]णिच्[4]शिक्षणाधिगमे कथं प्रयोगः।

---

[1]तै.उ. (शिक्षावल्ली)

[2]श्रीमद्भगवद्गीता 18.18

[3]समानकर्तृकयोः पूर्वकालेः 3.4.21

[4]णिचश्च 1.3.74

जम्बूद्वीप the e-Journal of Indic Studies
Volume 3, Issue 1, 2024, p. 88-96, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University

जम्बूद्वीप - The Journal Of Indic Studies

Vol. 2 No. 1 (2023): जम्बूद्वीप - the e-Journal of Indic studies

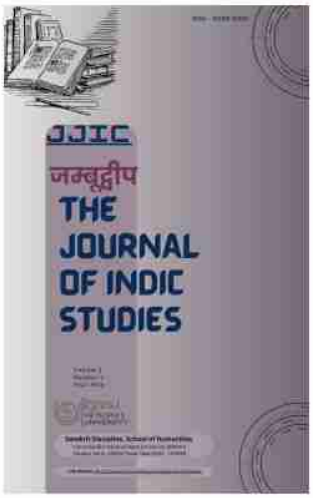

Published: 2023-05-30

Articles

वाजसनेयि संहिता में उभयपदप्रधान एवं मत्वर्थीय समास
Dr. Nisha Goyal

शुक्रनीति में वर्णित पर्यावरण संरक्षण
Lajja Bhatt

UNDERSTANDING DESHA (BIOLOGICAL DISTRIBUTION OF HABITATS) THROUGH THE LENS OF HEALTH AND WELLNESS
ANKUR KUMAR TANWAR

काव्यपाक
Dr. Chandrashekhar Tripathi

'वासकसज्जा ज्योत्सना' आडम्बरों से मुठभेड़ करती कविताएँ

Dr.Arun Kumar Nishad Arun

बीसवीं सदी के भारत के आध्यात्मिक समाज सुधारक स्वामी सहजानंद सरस्वती : एक मूल्यांकन

Lucky Sharma

Vipassana Yoga: it's Role in the Life of Freedom Fighter Freda Bedi

Brijeshwari Rukwal

भारतीय ज्ञान परम्परा और शोध

Hrushikesh Padhan Hrushikesh Padhan

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि के स्वरूप का मनोवैज्ञानिक अध्ययन

Dr. Surendra Mahto

भारतीय कला और बौद्ध कला - एक तुलनात्मक अध्ययन

Dr. Nishith Gaur

Current Issue

Information

For Readers

For Authors

For Librarians

Make a Submission

श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा एवं प्रकारों का अध्ययन

डॉ. सुरेन्द्र महतो
सहायक आचार्य, शिक्षापीठ,
श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

"गीता सुगीता कर्त्तव्या किमन्यैः शास्त्रविस्तरैः।" [1]*- इस कथन के अनुसार श्रीमद्भगवद्गीता को भलीभाँति पढ़ लेने/समझ लेने पर समस्त ज्ञान की प्राप्ति हो जाती है। अर्थात् गीता को समझ लेने पर अन्य शास्त्रों की कोई आवश्यकता नहीं है तथा गीता को नहीं समझने पर भी अन्य शास्त्रों में समय लगाना नासमझी है। अतः भारतीय वाघ्मय में श्रीमद्भगवद्गीता ही एक ऐसा ग्रन्थ है जिसका अनुवाद विश्व की अनेकों भाषाओं में उपलब्ध होता है। इस ग्रन्थ को जो व्यक्ति जिस भाव से अध्ययन करता है उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होती हैं। अर्थात् यह ग्रंथ सम्पूर्ण भारतीय शास्त्रों का निचोड़ है। इसकी प्रत्येक आवृत्ति में एक नई अनुभूति की प्राप्ति होती है। श्रीमद्भगवद्गीता के 61श्लोकों में बुद्धि शब्द का प्रयोग प्राप्त होता है। बुद्धि शिक्षा मनोविज्ञान की दृष्टि से ही नहीं अपितु भारतीय दर्शन का भी केन्द्र बिन्दु रहा है। बुद्धि का सन्दर्भ व्याकरण,दर्शन,साहित्य आदि में भी प्राप्त होता है। बुद्धि के अतिरिक्त अन्य मनोवैज्ञानिक तथ्यों जैसे- ध्यान,सीखना,व्यक्तित्व,स्मरण,विस्मरण,स्वप्न,रूचि,अभिवृत्ति आदि भी प्राप्त होते हैं जबकि मेरा उद्देश्य यहाँ श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की अवधारणा तथा भेद को आधुनिक मनोविज्ञान के परिप्रेक्ष्य में उद्घाटित करना रहा है।*

तकनीकी शब्द -
व्यवसायात्मिका - निश्चयात्मिका अर्थात् निर्णयात्मिका।
सात्विक - सत्व गुण से सम्बद्ध
राजस - रजो गुण से सम्बद्ध
तामस - तमो गुण से सम्बद्ध

उद्देश्य -
प्रस्तुत पत्र के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1. बुद्धि की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. बुद्धि के सिद्धान्तों को स्पष्ट करना।
3. बुद्धि के प्रकारों को स्पष्ट करना।
4. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि की परिभाषा का अन्वेषण करना।
5. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि के भेदों का अन्वेषण करना।
6. श्रीमद्भगवद्गीता में निहित बुद्धि तथा बुद्धि की आधुनिक संकल्पनाओं का समन्वय करना।

मनुष्य स्वभाव से जिज्ञासु एवं चिन्तनशील प्राणी है। जिज्ञासा पूर्ति के लिए वह इधर-उधर भ्रमण करता रहा हैं परिणाम स्वरूप भोजन संग्रह करने से प्रारम्भ कर उसने चाँद-तारों तक पहुँच बना ली हैं। मानव सृष्टि के सभी प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान है अर्थात् यूँ कह सकते हैं कि बुद्धि ही एक ऐसी विशिष्ट तत्त्व मानव में अन्तर्निहित है जिस कारण वह श्रेष्ठता

[1]म.भा. भीष्मपर्व अ. 43/1 एवं संक्षिप्त गीता पृ.-8

Volume 2, Issue 1, 2023, p. 54-59, ISSN 2583-6331
©Indira Gandhi National Open University